विषय: हिन्दी
पाठ: 5, लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै
कक्षा: छठी

जुरिमा दास, हिन्दी शिक्षिका,
सातपखली एम. भी. स्कूल, रामपुर ब्लॉक

हम इस पाठ के व्याकरण खंड से वर्ण माला के बारे में कुछ बातें व्यक्त कर रहे हैं जो छठी कक्षा के लिए बहुत गुरुत्वपूर्ण है । इन बच्चों के लिए हिन्दी भाषा सीखने, बोलने और लिखने की यही प्रमुख दर्जा है । इसलिए हमें बच्चों को प्रत्येक वर्णो के साथ पहचान करवा देना हमारा मुख्य कर्तव्य है ।

वर्ण विचार :

'राम पाठशाला गया।'

यह एक वाक्य है। बोलने के लिए ध्वनि और लिखने के लिए लिपि का सहारा लेना पड़ता है । उपयुक्त वाक्य तीन शब्दों से बना है - १) राम २) पाठशाला ३) गया

इसके प्रत्येक शब्द में कोई ध्वनियाँ हैं-

१) राम = र्+आ+म्+अ

२) पाठशाला= प्+आ+ठ्+अ+श्+आ+ल्+आ

३) गया= ग्+अ+य्+आ

इन ध्वनियों के और छोटे खंड नहीं हो सकते हैं , जिन पर विचार किया जा सके । अतः व्याकरण में इन्हें वर्ण कहते हैं।

वर्ण की परिभाषा :

हिन्दी भाषा में प्रयुक्त सबसे छोटी ध्वनि वर्ण कहलाती है । यह भाषा की वह छोटी इकाई है, जिसके खंड नहीं किए जा सकते हैं ।

जैसे: अ, आ, इ, ई, क्, ख्, ग्, ग्, घ्, आदि।

वर्णमाला :

वर्ण के समुदाय को ही वर्णमाला कहते हैं ।हिन्दी वर्णमाला में 44 वर्ण हैं ।

वर्णमाला के दो भेद किए गए हैं-

1. स्वर
2. व्यंजन

1. स्वर (vowels) - जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता हो और जो व्यंजनों के उच्चारण में सहायक हो वे स्वर कहलाते हैं । ये संख्या में 11 हैं- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

हर एक वर्ण के उच्चारण में कुछ- न- कुछ समय अवश्य लगता है । कुछ में थोड़ा कुछ में अधिक। उच्चारण के समय की **दृष्टि** से स्वर के तीन भेद किए गए हैं-

1. ह्रस स्वर
2. दीर्घ स्वर
3. प्लुत स्वर

1. ह्रस स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में कम से कम समय लगता है, उन्हें ह्रस स्वर कहते है । ये सिर्फ चार हैं- अ, इ, उ, ऋ ।

2. दीर्घ स्वर - जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस स्वरों से अधिक समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं । ये सात हैं- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ ।

3. प्लुत स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण दीर्घ स्वरों से भी अधिक लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं । प्रायः इनका प्रयोग दूर से बुलाने में किया जाता है । इसका प्रयोग अब काफी सीमित रह गया है । जैसे- हे रामऽ, सुनोऽ , ओऽम , किंतु आजकल इस (ऽ) का प्रयोग लिखाई में नहीं किया जाता ।

हम कक्षा में नीचे दिए गये चित्र जैसा बनाकर रख सकते हैं--

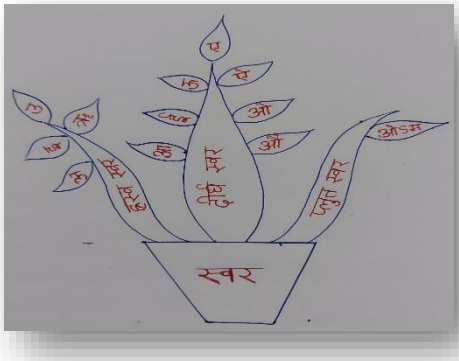

2. व्यंजन वर्ण (consonants) - जिन वर्णों के पूर्ण उच्चारण के लिए स्वरों की सहायता ली जाती है, वे व्यंजन कहलाते हैं । अर्थात् व्यंजन बिना स्वरों की सहायता के बोल ही नहीं जा सकते । यदि इन्हें स्वर के बिना लिखे तो इनके निचे टेढ़ी / तिरछी रेखा (्) लगा दी जाती है, जैसे- क्, ख्, ग् आदि । यह रेखा को हल कहलाती है । हलयुक्त व्यंजन हलंत कहलाते है।। ये संख्या में 33 हैं ।

इनके निम्नलिखित प्रमुख तीन भेद हैं -

i) स्पर्श व्यंजन

ii) अन्तःस्थ व्यंजन

iii) ऊष्म व्यंजन

इसके अलावा और दो भेद है जिनके संख्या में 6 हैं -

iv) संयुक्त व्यंजन

v) **द्विगुण** व्यंजन

(i) स्पर्श व्यंजन / उदित व्यंजन/ वर्गीय व्यंजन

वे व्यंजन जिनका उच्चारण करने पर जीभ मूल उच्चारण स्थानों (कंठ, तालु, मूर्धा, दंत, ओष्ठ) को स्पर्श करती है, ये स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं।यह व्यंजनों के शुरू के 5 वर्ग होते है इसीलिए इन्हें वर्गीय व्यंजन भी कहा जाता है।ये व्यंजन जीभ के अलग अलग उच्चारण स्थानों के टकराने से उत्पन्न हुए हैं, इसीलिए इन्हें उदित व्यंजन भी कहा गया है। इनकी संख्या 25 है।

वर्ग व्यंजन

क वर्ग - क, ख, ग, घ, ङ ।

च वर्ग - च, छ, ज, झ, ञ ।

ट वर्ग - ट, ठ, ड, ढ, ण ।

त वर्ग- त, थ, द, ध, न ।
प वर्ग- प, फ, ब, भ, म ।

(ii) अन्त:स्थ व्यंजन

अंत: का अर्थ होता है - भीतर या अंदर । जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ, मुँह के किसी भी भाग को पूरी तरह स्पर्श नही करती अर्थात इनका उच्चारण मुह के भीतर से होता है, अंत:स्थ व्यंजन कहलाते हैं। इनकी संख्या 4 है - य, र, ल, व ।

(iii) ऊष्म व्यंजन

ऊष्मा का अर्थ है - गर्मी या गर्माहट।जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय गर्मी उत्पन्न हो अर्थात इनके उच्चारण में मुख से हवा के रगड़ खाने के कारण ऊष्मा पैदा हो,ऊष्म व्यंजन कहलाते है।
इनकी संख्या 4 है - श, ष, स, ह ।

(iv) संयुक्त व्यंजन

जो व्यंजन दो व्यंजनों के मेल से बनते हैं, संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं। इनकी संख्या 4 है - क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ।
क्ष = क् + ष = क्षमा, रक्षा, कक्षा
त्र = त् + र = पत्र, त्रिशूल, त्रिनेत्र
ज्ञ = ज् + ञ = ज्ञान, विज्ञान, यज्ञ
श्र = श् + र = श्रवण, श्रम, परिश्रम

v) द्विगुण व्यंजन / उक्षिप्त व्यंजन / नव विकसित व्यंजन

ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में जीभ कही और टकराये और फिर कही और टकरा जाए, द्विगुण या उक्षिप्त व्यंजन कहलाते हैं। इन्हें नव विकसित इसीलिए कहा जाता है क्योंकि ये वर्ण संस्कृत में नही है ये केवल हिंदी में नए आये है इसीलिये इन्हें नव विकसित कहा जाता है। ड़ और ढ़ **द्विगुण** व्यंजन होते हैं। ये व्यंजन शब्दों के बीच या अंत में प्रयोग होते हैं। इन व्यंजनों से कभी कोई शब्द शुरू नहीं होता है। जैसे - कूड़ा, सड़ना, पढ़ना, बूढ़ा, आदि।
हिन्दी वर्णमाला में कुछ और अन्य वर्ण भी आते हैं- अं, अः, अँ, ऑ, ज़, फ़

अं, अः -

ऐसे वर्ण जिनका मेल न तो स्वर न ही व्यंजन से हो पाया है, ये वर्ण अयोगवाह कहलाते हैं। ये स्वर नहीं है परंतु इनकी भी स्वरों की तरह मात्राएं होती हैं। अतः इन्हें स्वरों के साथ लिखा जाता है। ये स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किये जाते हैं।

(क) अनुस्वार (ं)

इसे प्रयोजन हेतू वर्णों के ऊपर बिंदु के रूप में लगाते हैं । इसका उच्चारण नाक की सहायता से होता है। जैसे - अंकित, अंक, जंग, आदि। इसका उच्चारण 'म' के जैसे होता है।

(ख) विसर्ग (:)

इसे वर्णों के दाई ओर लगाते है । इसका उच्चारण कंठ से होता है। जैसे - दुःख, प्रायः, प्रातःकाल, दुःशासन, आदि। इसका उच्चारण 'ह' के जैसे होता है।

(यह पाठ-4 के No.8 में दिया हुआ है।)

अँ - अनुनासिक/ चंद्रबिंदु

जब किसी स्वर का उच्चारण नासिका और मुख से किया जाता है तब उसके ऊपर चंद्रबिंदु (ँ) लगा दिया जाता है । यह अनुनासिक कहलाता है । जैसे- हँसना, आँख ।
जिन स्वरों के ऊपर मात्रा होती है, उनमें चंद्रबिन्दु के स्थान पर केवल बिंदु लगाते हैं, जैसे- म्+ऐं = मैं
ह्+ऐं = हैं

ऑ, ज़, फ़ - आगत व्यंजन

ऑ (ॅ) (अर्धचन्द्राकार)-
हिन्दी भाषा में अंग्रेज़ी भाषा के कई शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इनमें कुछ शब्दों में प्रयुक्त होने वाली ध्वनि हिन्दी से भिन्न है। यह ध्वनि 'आ' तथा 'ओ' के बीच की है। इसलिए हिन्दी में इसके शुद्ध उच्चारण तथा लेखन के लिए अर्धचंद्राकार नामक चिह्न विकसित किया गया है इसका चिह्न – (ॅ) है।
उदाहरण - हॉट, बॉल ,कॉफी , डॉक्टर, आदि

(यह पाठ-2 के No. 14 में संक्षिप्त में दिया है जो हमें को विस्तार से बताना है।)

ज़ , फ़ -
हिन्दी में अंग्रेज़ी तथा उर्दू भाषा के शब्द निरन्तर प्रवेश कर रहे हैं, किन्तु उनका शुद्ध उच्चारण करने के लिए हिन्दी में लिपि चिह्न नहीं हैं। इसलिए उनको शुद्ध रूप में लिखने के लिए हिन्दी के व्यंजनों के नीचे एक बिंदु लगाया जाता है। यह जो नीचे बिंदु लगाया जाता है यही नुक्ता कहलाता है।

परंपरागत वर्ण
क ख ग ज फ
नुक्ता प्रयुक्त करके विकसित किए गए वर्ण
क़ ख़ ग़ ज़ फ़
महत्त्वपूर्ण तथ्य => 'क' , 'ख़' और 'ग़' में नुक्ते का प्रयोग अनिवार्य न होकर ऐच्छिक है। जबकि 'ज़' तथा 'फ़' में जब नुक्ता लगता है तो उर्दू तथा अंग्रेज़ी दोनों ही भाषाओं के शब्द बनते हैं।

'ज़' से युक्त उर्दू के शब्द - कर्ज़ , ताज़ा , ज़िंदगी , ज़िल्लत तथा ज़मानत आदि ।
'ज़' से युक्त अंग्रेज़ी के शब्द -रोज़ , इज़ , ज़ीरो , प्राइज़ तथा न्यूज़ आदि ।
'फ़' से युक्त उर्दू के शब्द -फ़रियाद , फ़तवा , फ़न , काफ़िला तथा फ़साद आदि ।
'फ़' से युक्त अंग्रेज़ी के शब्द -कफ़ , फ़ेल , फ़ाइट , फ़ाइन तथा फ़ादर आदि ।

वर्णों का उच्चारण स्थान

मुख के जिस भाग से जिस वर्ण का उच्चारण होता है उसे उस वर्ण का उच्चारण स्थान कहते हैं ।
आगे उच्चारण स्थान तालिका से वर्णों के उच्चारण स्थान का ज्ञान दे सकते हैं।
(वि.द्र. - लिखते समय व्याकरण पुस्तक तथा इन्टरनेट का सहारा लिया गया है ।)

क्रम	वर्ण	उच्चारण	श्रेणी
१.	अ, आ, क् ख् ग् घ्, ङ्, ह्, विसर्ग (:)	कंठ और जीभ का निचला भाग	कंठ्य
२.	इ, ई, च् छ् ज् झ् ञ्, य्, श	तालु और जीभ	तालव्य
३.	ऋ ट् ठ् ड् ढ् ण् ड़् ढ़् र् ष्	मूर्धा और जीभ	मूर्धन्य
४.	त् थ् द् ध् न् ल् स्	दाँत और जीभ	दंत्य
५.	उ ऊ प् फ् ब् भ् म	दोनों होंठ	ओष्ठ्य
६.	अं,ङ्, ञ्, ण्, न्, म्	नासिका	अनुनासिक
७.	ए ऐ	कंठ तालु और जीभ	कंठतालव्य
८.	ओ औ	कंठ जीभ और होंठ	कंठोष्ठ्य
९.	व्	दाँत जीभ और होंठ	दंतोष्ठ्य